निर्मला योग

द्विमासिक | वर्ष 1 अंक 3 | सितम्बर-अक्टूबर-19

ॐ त्वमेव साक्षात श्री सहस्रार स्वामिनी मोक्ष प्रदायिनी,
कलकी, भगवती माता जी श्री निर्मला देव्यै नमो नमः ।

सम्पादकीय

लाली मेरे लाल की जित देखूं तित लाल।
लाली देखन मैं गई, मैं भी हो गई लाल।

सन्त कवि श्री कबीर दास जी ने सहजयोग को इस एक दोहे में ही व्यक्त कर दिया है। सर्वत्र परमपिता परमेश्वर की ही लीला व्याप्त है। उस लीला का आनन्द उसमें लीन होने में ही है।

कुण्डलिनी जगृति के पश्चात् ध्यान धारणा द्वारा निर्विचारिता स्थापित कर के साधक को निराकार परमात्मा में समाहित कर देना ही परम लक्ष्य है।

परमपूज्य माता जी के आशीर्वाद और मार्गदर्शन द्वारा सम्पूर्ण विश्व इस मार्ग पर आगे बढ़े यही प्रार्थना है।

निर्मला योग

४३, बंगलो रोड, दिल्ली-११०००७

संस्थापक : परम पूज्य माता जी श्री निर्मला देवी

सम्पादक मण्डल : डॉ० शिव कुमार माथुर
श्री आनन्द स्वरूप मिश्र
श्री आर०डी०कुलकर्णी

प्रतिनिधि : क्रुस्टाइन रीगर
२१५, वैस्ट ९२ एन.डी. स्ट्रीट
ए.पी.टी. ७ ई, न्यूयार्क

श्री एम० बी० रत्नानवर
१३, मेरवान मैन्सन
गंजवाला लेन
बोरीवली (पश्चिमी)
बम्बई-४०००९२

श्री गेविन ब्राउन
९९ नाइटिंगेल लेन
क्लैपम साउथ, बालहम,
लन्दन

श्री राजाराम शंकर राजवाड़े
८४०, सदाशिव पेठ
पुणे-४११०३०

इस अंक में .....

	पृष्ठ
१. सम्पादकीय	१
२. प्रतिनिधि	२
३. तत्व की बात-२	३
४. माताजी का पत्र	१९
५. एक अनुभव	२३
६. एक सहजयोगी का पत्र	२४

तत्व की बात-२

कल मैंने आपसे कहा था कि,.....

आज आपको तत्व की बात बतायेंगे। जब हम एक पेड़की ओर देखें और उसका उन्नतिगत होना, उसका बढ़ना देखें, तो यह समझ में आता है कि उसके अन्दर कोई न कोई ऐसी शक्ति प्रवाहित है या प्रभावित है जिसके कारण वो पेड़ बढ़ रहा है और अपनी पूरी स्थिति को पहुँच रहा है। यह शक्ति उसके अन्दर है नहीं तो यह कार्य नहीं हो सकता। लेकिन यह शक्ति उसने कहां से पाई ? इसका तत्व मर्म क्या है ? जो चीज बाह्य में दिखाई देती है, जैसे कि पेड़ दिखाई देता है, उसके फल, फुल, पत्ते सब दिखाई देते हैं, ये तो कोई तत्व नहीं। इस तत्व पर तो यह चीज आधारित नहीं। वो चीज कोई न कोई इससे सूक्ष्म है। उस सूक्ष्म को तो हम देख नहीं पाये, उसकी यदि साकार स्थिति होती तो दिख जाता लेकिन वो निराकार स्थिति में है, माने कि उसके अन्दर चलता हुआ पानी है, वो भी उसका तत्व नहीं हुआ, हालांकि वहन कर रहा है। पानी ही उस शक्ति को अपने अन्दर से वहन कर रहा है। याने अगर पानी ही तत्व है तो पत्थर में पानी डालने से, वहां कोई पेड़ तो नहीं निकल आते। तब तत्व में जानना चाहिए कि हर चीज का अपना-अपना तत्व है। पानी का अपना तत्व है, पेड़ का अपना तत्व है और पत्थर का भी अपना तत्व है। उसी तरह मानव का भी अपना एक तत्व है, principle (प्रिन्सीपल) है, जिसके बूते पर वो चल रहा है, बड़ा हो रहा है, उससे उसकी उद्देश्य प्राप्ति होती है।

ये तत्व एक हो नहीं सकते। जैसे कि मैंने बताया कि पानी के तत्व से ही अगर, पौधा निकल रहा है तो एक पत्थर से पौधा क्यों नहीं निकलता। अगर बीज/पानी के तत्व से बीज पनप रहा है तो वो धरती माता की शरण क्यों जाता है ? अगर धरती माता की वजह से ही सारा कार्य हो रहा है तो धरती माता की वजह से यह जो पत्थर है वो क्यों नहीं पनपता ? इसका मतलब यह है कि अनेक तत्वों में एक तत्व है, लेकिन तत्व अनेक हैं।

ये सब अनेक तत्व जो हैं वो एक में समाये हैं और यह जो अनेक तत्व हैं यह हमारे अन्दर भी स्थित हैं, अलग अलग चक्रों पर इनका वास है, लेकिन एक ही शरीर में समाये हैं और एक ही ओर इनका कार्य चल रहा है, और एक ही इनका लक्ष्य है और एक ही चीज को इनको पाना है। जैसे कि मूलाधार चक्र पर गणेश तत्व है, गणेश जी का तत्व है। गणेश जी के तत्व के कारण हम आप पृथ्वी पर बैठे हुए हैं, ऐसे फेंके नहीं जा रहे। अगर हमारे अन्दर गणेश जी का तत्व नहीं होता तो इस पृथ्वी पर टिक नहीं सकते थे। इतने जोर से यह पृथ्वी घूम रही है, इस पर हम चिपके नहीं रहते। कोई कहेगा कि 'पृथ्वी के अन्दर ही यह गणेश तत्व है माँ' यह बात भी सही है। पृथ्वी के गणेश तत्व की वजह से ही हम पृथ्वी पर जमे हुए हैं। लेकिन जो पृथ्वी के अन्दर है उसको उसका axis कहते हैं, याने इस लाइन में वो तत्व बसा हुआ है उसको कहते हैं। हालांकि axis कोई है नहीं, कोई ऐसी सलाख axis नहीं है पर मानते हैं कि जो शक्ति है इसके तत्व को वो इस लाइन पर चलती है, उसी के ऊपर होती है उसके बीचोंबीच, सो वो तत्व हमारे अन्दर क्या बनकर रहता है इससे हमें दिशा का भान हो जाता है।

जानवरों में यह तत्व ज्यादा होता है पक्षियों में यह ज्यादा बहुत ज्यादा होता है क्योंकि भोले भाले

जीव हैं। उनमें छल, कपट, वैराग्य कुछ नहीं, वह विचार नहीं कर सकते। उनमें विचार करने की शक्ति नहीं है और न ही वो आगे का सोच सकते हैं ना ही वो पीछे का सोचते हैं। जो चीज सामने आती है उसी से वो काम लेते हैं। पीछे का बिल्कुल नहीं सोचते। आपको आश्चर्य होगा जब कोई बन्दर, आप देखिये, मर जाये; जब तक वो मरता नहीं तब तक वो हाय तोबा मचायेंगे, जैसे ही वो मर जायेगा वो उसको छोड़ देंगे, भाग जायेंगे, मतलब यहीं खत्म। अब इससे मर गया न, यह तो ऐसा हो गया जैसे, कोई दूसरे पत्थर, अब इससे कोई मतलब नहीं, बिल्कुल बेकार चीज है। लेकिन धीरे धीरे उसके अन्दर यह जरूर है कि अनुभव; जैसे आपने शेर को पकड़ने की कोशिश की, दो तीन बार उसको जाल में फंसा लिया, तो फिर वो ताड़ जाता है कि इसमें कोई गड़बड़ है। बहुत कुछ तो भगवान की दी हुई चीज है लेकिन कुछ कुछ फिर वो सीख जाता है। आदमियों से भी तो बहुत कुछ सीख लेता है लेकिन उसमें परमात्मा की दी हुई चीज बहुत ज्यादा है। जिससे उसमें स्फूर्ति आती है। जैसे जापान में ऐसे पक्षी हैं, जब वो उड़ने लगते हैं ज्यादा और भागने लग जाते हैं, तब लोग समझ जाते हैं कि अब जल-जला आने वाला है, भूकम्प आने वाला है। क्योंकि इन पक्षियों को गड़गड़ाहट बहुत पहले सुनाई दे जाने लगती है। जानवरों को भी आवाज मनुष्य से बहुत ज्यादा पहले सुनाई दे जाती है। बहुत सुनने की शक्ति, देखने की शक्ति। अगर कोई चील ऊंचाई से देखे तो वो समझ जाती है कि यह आदमी मरा है या जिन्दा। यह सारी जो आठ इन्द्रियों की शक्तियां हैं ये जानवरों में इन्सान से ज्यादा हैं और उसमें से सबसे बड़ी शक्ति जो उसके पास होती है, जो गणेश तत्व से पाई जाती है वो है दिशा का अनुभव, कौन सी दिशा में जाना चाहिए। मैंने कल आपसे बताया था कि जब पक्षी साईबेरिया से आते हैं तो वो उसी वजह से जानते हैं कि वो उत्तर जा रहे हैं या दक्षिण जा रहे हैं, या पूरब जा रहे हैं या पश्चिम में जा रहे हैं। पर जैसे-२ गणेश तत्व कम होता जाता है वैसे-२ दिशा का ज्ञान समाप्त होता जाता है। दूसरी तरफ मनुष्य प्राणी में जो आदमी बहुत ज्यादा सोच-विचार के चलता है, कि मैं ये करूँ या न करूँ, इसमें कितना लाभ होगा, इसमें कितना नुकसान होगा, इसमें रुपया लगाऊँ कि इसमें रुपया लगाऊँ, इस तरह की फालतू बातों में जब अपना चित्त बरबाद कर देता है, उसको दिशा का भान कम हो जाता है। उसको आप एक दिशा में खड़ा कर दीजिए कि आपको उत्तर में जाना है। थोड़ी देर में देखियेगा, वो दक्षिण की ओर चले जा रहे हैं। रास्ते का उसको ज्ञान नहीं रहता। अगर आप उसको कहीं खड़ा कर दीजिये आप उससे पूछिये रात में पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण कैसे पता लगायें, सूरज तो है नहीं। जब आप का चित्त इसी तरह बाहर की ओर ज्यादा हो जाता है, और या तो आप किसी की चालाकी से पस्त होते हैं या आप किसी को चालाकी से डुबाना चाहते हैं, दोनों ही चीज हो सकती हैं। आप या तो भयग्रस्त हैं कि दूसरा आपको चालाकी से खा न डाले और या तो आप किसी के पीछे लगे हैं कि उसे चालाकी से कैसे डुबाया जाए—दोनों हालात में आपकी जो अबोधता है, आपकी जो innocence है वो घटती जाती है। और जब ऐसी गति आ जाती है तो आपको दिशा का आभास नहीं रहता। एक छोटी सी बात बताएं, आप बुरा मत मानिये। मैं आजकल देखती हूँ, पहले लड़कियों में ये बात थी लेकिन उनमें भी यह बात नहीं। दिल्ली शहर में ज्यादा है, कि हर आदमी की ओर नज़र उठाकर देखने लगी हैं। पहले तो मर्द ही देखते थे, अब औरतों ने भी शुरू कर दिया है। अब इसको आप सोचते हैं ये बहुत ही सीधी बात है, इसमें कौन सी ऐसी बात है। हर आदमी को और जरूरी है ऐसे देखना। लोग कहेंगे इसमें शिष्टाचार की बात मां कह रही हैं। ये बहुत गहरी बात है। जितना आप देखते हैं, उतना ही चित्त आपका बाहर की ओर जाता है,

जितनी आपकी दृष्टि बाहर की ओर जाएगी उतना आपका मूलाधार चक्र खराब होगा। विशेष करके इस तरह की चीजों की ओर या बहुत से लोगों की ये आदत होती है कि हर रास्ते में जो चीज पड़ती है, हर advertisement पढ़ना चाहिए अगर एक दो चीज छूट गई तो पीछे मुड़कर देखेंगे, वो पढ़ना है। या हर चीज बाजार में दिख रही है, हर चीज उनको देखना ही है। ये कौन सी चीज है, कौन सी चीज है, कौन सी चीज है। आंख का सम्बन्ध हमारे मूलाधार चक्र से बहुत नजदीक का है। पीछे की तरफ में यहां पर भी हमारा मूलाधार चक्र है। इसका सम्बन्ध हमारी आँख से बहुत जबरदस्त होता है। इसलिए जो लोग अपनी आंखें बहुत इधर उधर चलाते हैं उन को मैं आगाह कर देना चाहती हूँ कि उनका मूलाधार चक्र बहुत खराब हो जाता है और अजीब-२ तरह की परेशानियां उनको उठानी पड़ती हैं। सब से पहले तो बात यह हो जाती है कि ऐसे आदमी का चित्त स्थिर नहीं रह पाता। क्योंकि वो अपनी दिशा भूल गया। इधर-उधर धीरे-धीरे देखना भी दिशा भूल का एक नमूना है। जिस आदमी को अपनी दिशा मालूम है, वो सीधे चला जाता है। दिशा का भूल जाना मनुष्य ही कर सकता है, जानवर नहीं कर सकता। क्योंकि उसको कोई वजह ही नहीं, वो दिशा क्यों भूले ! समझ लीजिये किसी एक जानवर ने किसी दूसरे जानवर को मार कर कहीं डाल दिया, उसे मालूम है उसने उसे कहां डाला है, उसको उसकी सूंघ आएगी उस की समझ में आएगा, वो बराबर अपने मौके पर पहुँच जाएगा। भटक नहीं सकते। अगर आप किसी बिल्ली को घर से निकालना चाहें तो सात मील की दूरी पर उसको ले जाकर छोड़ दें, तो भी शायद वापस चली आएगी। कुत्ते के तो क्या कहने कुत्ता तो ऐसे सूंघ कर घूमता है कि उसे फौरन पता चल जाता है कि चोर कहां गया और कहां की चीज कहां गई। लेकिन मनुष्य के अन्दर तो सूंघने की शक्ति भी बड़ी नष्ट हो जाती है। उसे गंदगी की तो बदबू आने लगती है लेकिन पाप की गंदगी की नहीं आएगी। वो उसे नहीं सूंघ पाता है जो हमारे अन्दर पाप बन कर जी रहा है और जो आदमी है महापापी। उसके साथ हम खड़े हैं। उसको उस की बदबू जरूर आ जाएगी कि यहां गन्दा पड़ा है, यहां सफाई नहीं है, यह नहीं है, वो नहीं है महापापी जो उसके पास खड़ा है उसकी बदबू उसको नहीं आयेगी। और वो महापापी कोई हो, मिनिस्टर हो कोई हो तो उसके तलुए चाटने में इनको फरक नहीं पड़ेगा।

गणेश तत्व के खराब हो जाने से मनुष्य का सारा, यों कहना चाहिए कि, अस्तित्व खराब हो जाता है और गणेश तत्व जो है उस पर चन्द्रमा का वर्चाव है। चन्द्रमा जब बिगड़ जाते हैं तो आदमी को Lunacy की बीमारी हो जाती है आदमी पागल हो जाता है। और पागल तो क्या हो जाता है असल में बात यह होती है कि जब आदमी इधर उधर अपनी आंखें घुमाने लग जाता है, तो उस का चित्त अपने आप अपने काबू में नहीं रहता और कोई सी भी दुष्ट आत्मा उस पर आघात कर सकती है। जब विदेश के लोगों को मैंने बताया कि तुम लोग क्या कर रहे हो अपनी आंख के साथ। ईसा मसीह ने साफ शब्दों में कहा यह लिखा गया है कि 'Thou shall not commit adultery' लेकिन I would say unto 'Thou shall not have adultrous eyes.' हम इस तरह से अपना गणेश तत्व खराब करते रहते हैं। और जिसका गणेश तत्व खराब हुआ, उसकी कुण्डलिनी टिक नहीं सकती। फिर खिचकर वापस चली आती है। कितनी भी मुश्किल से ऊपर उठ कर कुण्डलिनी जैसे कि कोई चरखी हो इस तरह से गणेश जी उसे खींच लेते हैं।

कुण्डलिनी उठती नहीं और उठती भी है तो फिर जाकर दब जाती है। इसमें, अगर समझ लीजिये कोई आदमी चोर हो, चकार हो, चोरी

करता हो तो परमात्मा की नजर में इतना बड़ा गुनाह नहीं है। Govt. से चोरी करता है तो समझ लो कि Income है अपना ही Income है उसमें पता नहीं कौन चोर है। Govt. चोर है या जिसका Income tax खाया जा रहा है वो चोर है। उसका मतलब यह नहीं कि आप Income tax न दें लेकिन परमात्मा की नजर में वो आदमी बहुत दूषित है जिसकी नजर स्त्री के ऊपर शुद्ध नहीं है सिवाय अपनी पत्नी को छोड़कर बाकी सब औरतें शुद्ध स्वरूप में देखनी चाहिए। लेकिन आज के लोग ऐसा मानते नहीं कि ऐसा होता था। जैसे हमारी उम्र में हम तो अधिकतर लोगों को ऐसा ही देखते थे। अब इस उम्र में देखते हैं तो हमारी उम्र की औरतें, जो लोग बुड्ढे लोग हैं वो भी सत्यानाश हो गए। अपनी उम्र में उन्होंने अपने जबानों से ये बातें सीखी हैं और बुड्ढे ज्यादा ही बरबाद हो गए जबानों से। कुछ समझ में नहीं आता कि इन लोगों को अक्ल कब आयेगी। जब जवान थे, कोई मजाल नहीं जब हम लोग छोटे थे तो कभी भी ऐसा सवाल नहीं उठता था। हम तो अकेले चले जाते थे कहीं भी। पंजाब में भी हम पढ़े हुए हैं। पंजाब में मजाल नहीं कोई बदतमीजी कर ले सब लोग फाड़ खायेंगे। और अब वहीं के ये लोग पंजाबो आये हैं। मजाल नहीं सरदार जी लोग किसी औरत को कभी एक बुरी निगाह से किसी ने देख लिया तो खून-खराबी हो जाती थी। और आज यह अपनी हालत हो गई है कि किसी को किसी का पता नहीं। और अगर आप कहें कि यह कैसे हो सकता है हमारा तो चित्त ही नहीं बच सकता। अरे भई, पचास साल पहले यह नहीं था, चालीस साल पहले भी नहीं था तो आज क्या हो गया है कि हम लोगों की सभी आंखों की शर्म और हया कहां चली गई? अरे कोई बताता थोड़ी था कि शर्म, हया करो वह तो सब अन्दाज हो ही जाता था। इन्सान को पता रहता ही था। इसी तरह से पहले लोग रहते थे। आजकल बहुत लायक हो गए ना? तो जैसे-२ चलते हैं अगर हमने इसमें अपना गणेश तत्व खो दिया, बहुत कुछ खो दिया। कल आपने पूछा तो मैं बता रही हूँ वरना मैं कहती नहीं कि लोग बुरा मान जायेंगे। लेकिन आजकल की जो हवा है वो बहुत खराब है, बहुत नुकसानदेय है। इसी से हमारे यहां सब तरह के indiscipline (अनुशासन हीनता), खराबी और बदतमीजियां और दुष्टता आ रही हैं। जब आप इस तरह के काम शुरू कर देते हैं। अब तो जब औरतें भी इस ढंग की हो गईं, तो आदमियों का क्या हाल होगा? इस तरह आजकल औरतों का हाल है आदमी तो आदमी औरतें भी इस तरह की होने लग गईं इस संसार में। परमात्मा का राज्य आना मुश्किल है। आजकल इस तरह के गुरु भी हो गए हैं जो सिखाते हैं कि ऐसे धन्धे करो तो भगवान मिल जायेगा। तो और भी अच्छे ऐसे गुरुओं के इलाकों में लोग आ गए ऐसे गुरुओं के हाथ पड़ते हैं। यहां अब इतने बैठे हैं, ऐसे गुरुओं के पास दस गुने बैठ जायेंगे। ये बातें किसी को अच्छी थोड़ी लगती हैं। अरे भाई आराम से जैसा करना है करो अपने गणेश तत्व को कुचल मारो, गणेश जी को सुला दो।

कुण्डलिनी तत्व जो है। ये कोई साइन्स-वाइन्स (विज्ञान) की बात नहीं है ये तो पवित्रता की बात है। पवित्र आदमी की—Holiness, लोग मुझे Her Holiness तो कहते हैं पर Holiness (पवित्रता) की जब बात करती हूँ तो उनको समझ में नहीं आता कि आजकल तो कोई गुरु ऐसा नहीं कहता कि आपको पवित्र होना चाहिए। माताजी तो एक अजीब गुरु हैं जो पहले ही शुरू कर देती हैं कि आपको पवित्रता रखनी चाहिए। वाह, अधिक तो गुरु यही कहते हैं कि भाई जो करना है वो करो पर पैसा जमा कर दो बस काम खतम। पैसा तुमने जमा किया कि नहीं?

कुण्डलिनी-जागरण जो है, यह असलियत है, reality है, actualisation है। इसके लिए

मनुष्य का पवित्र होना जरूरी है। अगर आप पवित्र नहीं हैं तो आपको कुण्डलिनी जागरण का अधिकार मिलना नहीं चाहिए। फिर भी माँ का रिश्ता है, माँ मानने को तैयार कभी नहीं होती कि मेरा बेटा जो है वो गिर गया है। उसके लिए बड़ा मुश्किल हो जाता है क्योंकि उसको ही लांछन लगता है। इसी से तो सारी अपनी पुन्याई लगा के कहती हूँ कि पूजा-पाठ तो करा दो। पहले यह बात जानना चाहिए कि चाहे आप बुरा मानें या भला अपने जीवन को पार होने के बाद आपको जरूर पवित्र बनाना होगा। पवित्रता आप में बहुत जरूरी आनी चाहिए। इसका यह मतलब नहीं कि आप सन्यासी बनकर घूमें, सन्यासियों को भी सहज-योग नहीं मिल सकता। यह मतलब मेरा बिल्कुल नहीं कि आप किसी unnatural (अप्राकृतिक) तरीके से रहिये, बिल्कुल नहीं। इससे आदमी बड़ा ही सूख जाता है, सूखा इन्सान हो जाता है। वो भी मना है। देखिये, मंगलमय वैवाहिक जीवन सहज-योग में आशीर्वादित होता है यहां तक कि सहज-योग के विवाह भी होते हैं जो बहुत ज्यादा हमने देखे हैं, लाभदायक होते हैं। सहज-योग की तरफ से हम लोग विवाह करते हैं, उससे बहुत लाभ होता है।

विवाह एक मंगलमय कार्य है और उसमें आप जानते हैं हम हमेशा गणेश की स्तुति करते हैं। अगर आपमें पवित्रता नहीं है तो आप परमात्मा की बात नहीं कर सकते; सच बात मैं आप से कहूँ। इसलिए बहुत लोग कहते हैं, कि माँ हमारे कर्मों के फलों का क्या होगा? और हमारे कर्म अच्छे हैं नहीं। बहरहाल मेरे सामने यह बातें नहीं करने की क्योंकि मां के लिए ये सब कुछ मुश्किल काम नहीं। उनका नाम ही बनाया है पाप-नाशिनी वगैरह, तो क्या है? लेकिन पार होने के बाद याद रखना चाहिये कि सब गुनाह माफ हैं पार होने तक क्योंकि आप पार नहीं थे अन्धेरे में थे। चलो जैसे भी हो लेकिन उसके बाद यह बात जाननी चाहिये कि अपने गणेश तत्व को आप बहुत आसानी से जगा सकते हैं। जब यह परदेसियों में जम गया है तो फिर आप लोगों में क्यों न जमे। जब इन लोगों ने सीख लिया है कि पवित्रता क्या है तो क्या आप लोग नहीं जमा सकते? कम से कम ऐसा हिन्दुस्तानी अभी तक मुझे नहीं मिला जो अपवित्रता को अच्छी समझता हो। करता है, पर जानता है कि गुनाह है, गलती है, यह समझता है। कोई हिन्दुस्तानी चाहे विदेश में रहा हो, करता है पर जानता है गलत काम है, लेकिन यह तो बेचारे यह भी नहीं जानते कि यह गलत काम है। यह तो सोचते हैं अच्छा काम है। वो तो कहते हैं कि करना ही चाहिए ऐसा। इसके बिना आपका कल्याण नहीं, ऐसा भी ये लोग सोचते हैं। इतने बेवकूफ हैं इस मामले में, यानि सरल हैं बेचारे। तब भी वो बच गए, आप भी बच सकते हैं। लेकिन जिम्मेदारी आप पर है। इस गणेश तत्व को बनाये रक्खें जैसे गणेश हैं। देखिये मूलाधार चक्र जो है वो कहां पर है? जो कुछ भी विसर्जित किया है उसको कहना चाहिए कि excretion जितना होता है उस पर श्री गणेश बैठा दिये गए हैं। वो सारा कार्य श्री गणेश करते हैं। क्योंकि श्री गणेश जैसे कीचड़ में कमल होता है उस प्रकार हैं। अपनी सुगन्ध से सारा सौरभ इतना लुटाते हैं कि वो कीचड़ भी सुगन्धमय हो जाता है। आपको आश्चर्य होगा कि जैसे ही आपका गणेश तत्व जमना शुरू हो जायेगा आपने सोचा भी नहीं होगा, आप जानते भी नहीं होंगे कि कितना आनन्द अन्दर से आने लगता है क्योंकि तत्व निर्मल है इसका। तत्व का मतलब ही निर्मलता है। जो चीज निर्मल है, माने तत्व पर आ गई उसका मल ही सारा हट गया और वो ही निर्मल होता है जो किसी मल को अपने अन्दर जमने न दे। कोई भी चीज जो निर्मल करती है वो तत्व ही हो सकती है। क्योंकि तत्व से कोई चीज लिपट नहीं सकती। हमेशा तत्व बना रहती है। इसलिए सबसे पहले हम लोग गणेश का आह्वान करते हैं और उनकी आराधना करते हैं और उनको हम मानते हैं। लेकिन आजकल

लोग कुछ ऐसे निकल गए हैं कि कुण्डलिनी के नाम पर गणेश जी का अपमान कर रहे हैं सुबह से शाम तक। इतना अपमान कर रहे हैं कि मैं आपसे बता नहीं सकती।

कुण्डलिनी उनकी मां है और वो भी कन्या। कन्या स्थिति में वो भी जब पति के विवाह से पहले उनका स्वागत करने से पहले जब नहाने गई विवाह उनका हो चुका था, लेकिन अभी पति से मुलाकात नहीं हुई थी। तो जब नहाने गई थी तब उन्होंने श्री गणेश जी को बनाकर bathroom के पास रख दिया था। यह बात सही है, एक दूसरे माने में या एक दूसरे आयाम (dimension) में। यह बात है कि वो अपनी माँ की रक्षा करे कि उन की प्रतिष्ठा की रक्षा करे, उनके protocol की, उनकी पवित्रता की रक्षा करे क्योंकि वो virgin (कुमारी) है, वो कन्या है, इसी प्रकार हमारे अन्दर जो कुण्डलिनी है गौरी स्वरूपा है, अभी virgin है, उनका उनके पति से मेल नहीं हुआ। पति उनके आत्मा-स्वरूप शिवजी हैं और गणेश वहाँ बैठे हुए हैं और उस दरवाजे पर श्री गणेश बैठे हुए हैं, उस दरवाजे से शिवजी भी नहीं जा सकते। इतना पवित्र वो दरवाजा है और यह दुष्ट लोग, इनको तो तान्त्रिक कहना चाहिए, उस तरह से कोशिश करते हैं कुण्डलिनी मां की ओर जाने की और इसी वजह से उनको हर तरह की तकलीफ हो जाती है। जिस आदमी में पवित्रता नहीं है उसको कोई अधिकार नहीं है कि वो कुण्डलिनी जागृत करे। अगर ऐसा आदमी कोशिश करेगा तो जरूरी है कि श्री गणेश उस पर नाराज हो जायेंगे और फलस्वरूप उसके अन्दर अनेक तरह को विकृतियां आ जायेंगी। कई लोग तो, मैंने सुना है, नाचने लग जाते हैं, कई लोग हैं चिल्लाने लग जाते हैं, कई लोग भ्रमित हो जाते हैं, और कई जानवर जैसी बोलियां निकालने लगते हैं। किसी किसी लोगों को मैंने देखा है कि उनके अन्दर blisters (फफोड़े) आ जाते है क्योंकि ऐसे लोगों के पास वो जाते हैं जो अपवित्र हैं, जिनको कुण्डलिनी के लिए कोई मालूमात नहीं और जब वो कुण्डलिनी की ओर अग्रसर होते हैं गलत रास्तों से और गलत तरीकों से तब उन पर स्वयं साक्षात् गणेश गरजते हैं। साधक के श्रीगणेश और साधक को बहुत तकलीफ उठानी पड़ती है। सारा तान्त्रिक शास्त्र गणेश जी को नाराज करके पाया जाता है। जिनको लोग तान्त्रिक कहते हैं वो असल में तान्त्रिक नहीं है। जो वास्तविक निर्मल तन्त्र है वो यह है, जो सहज-योग है। क्योंकि तन्त्र माने कुण्डलिनी है, यन्त्र माने कुण्डलिनी है तो यह शास्त्र केवल सहज-योग में ही जाना जा सकता है। और बाकी जो तान्त्रिक हैं ये परमात्मा के विरोध में है, ये दुष्ट लोग हैं, ये देवी जी को नाराज करके, ये गणेश जी को नाराज करके उनके सामने व्यभिचार करके ऐसी सृष्टि तैयार करते हैं जहां वो दुष्ट कारनामे कर सकते हैं; जहां वो भूत विद्या, शमशान विद्या आदि करके लोगों को भ्रमा सकते है। यह बहुत समझने की बात है, कि जिसका गणेश तत्व ठीक होगा उस पर कभी तान्त्रिका हाथ नहीं मार सकते कभी नहीं, चाहे कितनी भी कोशिश कर ले। जिस आदमी का गणेश तत्व ठाक है, उस आदमी का कोई बाल बाँका नही कर सकता। इसलिये गणेश तत्व जो कुछ है वो सुरक्षा का तत्व है।

सबसे बड़ी सुरक्षा गणेश तत्व से होती है। इसलिये अपने गणेश तत्व को आपको बहुत ही ज्यादा सुचारू रूप से संवारना चाहिये। सबसे पहले तो अपनी नजर नीचे रखिये। लक्ष्मण जैसे आप बनें, और अपनी आँख सीताजी के चरणों में ही रखिये। क्या उनके अन्दर कोई पाप नहीं था लेकिन सीताजी के ही क्या, इसका मतलब यह कि उन्होंने चरण को ही देखा क्योंकि उन्हें ज्ञात था कि ऊपर देखना, किसी की ओर दौड़ना अपना चित्त ही बिगाडना है।

गणेश तत्व हमें पृथ्वी माँ से मिला मिला है, धरती माँ ने हमे गणेश तत्व दिया है। अब हम

इसलिये पृथ्वी माँ का अनेक बार धन्यवाद मानते हैं कि आपने हमें यह तत्व देकरके दिशा का ज्ञान दिया। जब मनुष्य के अन्दर गणेश तत्व जागरूत हो जाता है, उसके अन्दर विवेक-बुद्धि आ जाती है। इसलिये गणेशजी से हम कहते हैं कि हमारे अन्दर विवेक, सुबुद्धि हमारे अन्दर Wisdom दीजिये। मनुष्य के अन्दर यदि दिशा का ज्ञान नहीं भी हो तो कुछ फरक नहीं पड़ता लेकिन अच्छे बुरे का उसको ज्ञान होना जरुरी है और इसीलिये हम उनसे मांगते हैं कि हमें आप विवेक दीजिये। इसीलिये वो विवेक देने वाले माने जाते हैं। यह गणेश तत्व है।

अब हमारे अंदर जो दूसरा बहुत महत्वपूर्ण तत्व है वो है विष्णु तत्व। विष्णु तत्व से हमारा धर्म धारण होता है अंदर, जो कि हमारे नाभि चक्र से प्रवाहित होता है जो हमारे नाभि में है। नाभि में हमारे अंदर धर्मधारणा है। जैसेकि आप amoeba में थे जो आप अपना खाना पीना खोजते थे। जब आप amoeba से और ऊंचे हो गए, इंसान की दशा में आ गए तब आप अपनी सत्ता खोजते हैं और उससे आगे जब आप जाते हैं तो आप परमात्मा को खोजते हैं। आप के अंदर यह धर्म है कि आप परमात्मा को खोजें, यह मनुष्य का धर्म है। जानवर नहीं खोज सकते। कोई भी प्राणी परमात्मा को नहीं खोज सकता, केवल मनुष्य ही परमात्मा को खोज सकता है। ये मनुष्य का धर्म है। और इसके दस धर्म हैं और ये धर्म का तत्व विष्णु जी से हमें मिलता है। अब बहुत से लोग सोचते हैं कि विष्णु जी से हमें पैसा मिलता है, और विष्णु जी से हमें और लाभ होते हैं लेकिन ये बात नहीं है कि सिर्फ उनसे हमें पैसा ही मिलता है। ऐसी ऐसी गलत भावनाएं हमारे मन में बसी हुई हैं कि विष्णु जी से सारा क्षेम जो है हमें मिलता है और बाकी कोई मतलब नहीं। सारे क्षेम से क्या लाभ होता है, आप सोचिये ? जब मनुष्य क्षेम को पाता है, समझ लीजिए, आप एक दशा लीजिए। एक मछली है उसने यह जान लिया कि अब हम इस समुद्र से पूरी तरह से संतुष्ट हैं, तो संतोष को पा लेती है। तब उसे विचार आते हैं कि समुद्र को तो सब देख लिया, उसका तो धर्म हमने जान लिया-समुद्र का-अब हमें जानना है कि जमीन का धर्म क्या है। तो वो अग्रसर होती है। मछली का अवतरण जो हुआ है तो सिर्फ इसलिए हुआ है, कि एक मछली उसमें से बाहर आ गई अब जब तो मछली बाहर आ गई-एक ही मछली-वही अवतार हम मानते हैं, जो पहले बाहर आई, और उसने बहुत सारी मछलियों को अपने साथ खींच लिया, क्या सीखने के लिये? कि धर्म क्या है। कौन सा धर्म ? जमीन का धर्म क्या ? इसलिये नहीं कि वो मछलियाँ बाहर आ गईं। अब उनमें दूसरा धर्म सीखने की बात आ गई। पहले पानी का धर्म सीखा फिर अब जमीन का धर्म सीखने लगे। जब जमीन का धर्म सीखने लगे तो रेंगते रेंगते उन्होंने देखा कि पेड़ भी हैं। पेड़ के भी आप पत्ते खा सकते हैं। क्षुधा पहली चीज होती है जिससे कि आदमी खोजता है। खोजने की शक्ति नाभि में ही पहले इसलिए होती है कि उसमें एक क्षुधा होती है। आपको इच्छा होती है कि किसी तरह से अपने...और जानवर हो जाने के बाद उसने सोचा कि अब गर्दन उठाकर रहें। बहुत झुक-झुक कर रहे, अब गर्दन उठाकर कर रहें। जब उसने गर्दन उठाई तब वो मनुष्य बना। धीरे-धीरे फिर वो मनुष्य बना। पर हमारे अंदर ये जो धर्म है कि हम धर्म को धारण करते हैं, जैसे कि पहले मछली का धर्म था कि वो पानी में तैरती थी, उसके बाद कछुए का धर्म था कि वो रेंगता था जमीन पर। उसके बाद जो जानवर थे उनका ये धर्म था कि वो चार पैर से चलते थे लेकिन उनकी गर्दन नीचे थी। फिर घोड़े जैसे उन्होंने अपनी गर्दन ऊँची कर दी। उसके बाद उन्होंने सारा शरीर ही खड़ा कर दिया और दो पैर पर खड़े हो गए। ये मनुष्य का धर्म है कि दो पैर पर खड़ा है और उसकी गर्दन सीधी है-ये तो बाह्य में हुआ-बहुत ही ज्यादा जड़ तरीके से, आप समझे। लेकिन तत्व में क्या मनुष्य के पास जो कि हर बार जब भी आप कोई-सा भी काम करते हैं तो तत्व

अपने कार्य में भी उसी तरह से प्रभावित होना चाहिए। समझ लीजिए आज हम इसमें से बातचीत कर रहे हैं और आप हमें समझ रहे हैं। लेकिन इससे भी बढ़िया कोई चीज आ जाए तो ये मशीनरी जो काम करेगी वो भी नई होगी या नहीं। इसी प्रकार मनुष्य के अंदर का भी जो तत्व है, वो एक नया विकसित तत्व है, और वो तत्व जो कि परमात्मा को खोजे, उसका जो तत्व है तो परमात्मा को खोजता है, इसलिए मनुष्य का प्रथम तत्व है परमात्मा को खोजना। जो मनुष्य परमात्मा को खोजता नहीं वो पशु से भी बदतर है। अब जब वो परमात्मा को खोजने निकला तब उसका तत्व जो है, नाभि चक्र का पूर्ण हुआ। अब वो अगले तत्व पर आया। कि जब परमात्मा को खोजने लगा तो उसने देखा कि ससांर की सारी सृष्टि बनी हुई है। हो सकता है इन तारों में, ग्रहों में और इन सब में ही परमात्मा हो। उसके तरफ उसकी दृष्टि गई। तब उसे हिरण्यगर्भ याद आए। उन्होंने वेद लिखे। उनका अग्नि आदि जो पाँच तत्व की ओर चित्त गया। उसको जानने की उन्होंने कोशिश करी। उनको जानते हुए उनको जो हवन वगैरा करते थे, वो किये और ब्रह्मदेव और सरस्वती की अर्चना की और सब कुछ करने के बाद भी उन्होंने देखा कि इस सबको तो हम जान गए। जैसे कि Science में लोग सब कुछ जान गए, बहुत कुछ जान गए। लेकिन जब Science का नतीजा निकला तो उन्होंने कहा कि ये क्या, हमने तो atom bomb बना दिया। अब उस कगार पर आकर खड़े हो गए science वाले भी कि हम आगे कहाँ जा रहे हैं अब तो गड्ढा ही सामने है। इससे एक कदम आगे गए तो सारा ससांर एक क्षण में खत्म हो जाएगा। अब उन्होंने किताबें लिखी हैं कि आप अगर पढ़ें तो एक है कि shock पर, मतलब ये कि कितना बड़ा shock है, और ससांर में लोग अज्ञान में बैठे हैं, इसलिए दुखी हैं। जैसे France के लोग हैं तो हमेशा मुँह लटकाए रहते हैं। तो मैंने कहा कि ये क्यों। तो कहने लगे, माँ इन लोगों को अगर कहिये कि आप सुखी हैं और, आनन्द तो कहेंगे आप से बढ़कर बुद्धू कोई नहीं। और आप बिल्कुल ही इस दुनिया की बात नहीं जानते तो मैंने कहा-अच्छा। क्योंकि ये कहते हैं कि हम तो पढ़ते लिखते रहते हैं और हमनें ऐसी ऐसी किताबें पढ़ी हैं जिनसे ये ज्ञात होता है कि दुनिया पर बड़ी भारी आफत आने वाली है और सारा संसार खत्म हो जाने वाला है। मनुष्य ने पूरी तैयारी कर ली है कि अपने को एक मिनट में खत्म कर ले। और ये बड़ी भारी आफत की चीज है और आप सुख में बैठी हैं, आनन्द में बैठी हैं। तो इन पर विश्वास नहीं होगा। तो मैंने कहा कि क्या इसीलिए लोग शराब पीते हैं? क्योंकि बड़े दुखी जीव हैं, बड़े दुखी हैं न। मुँह लटकाने के वक्त तो दुखी हैं, फिर शराब क्यों पीते हैं। अच्छा, ये भी कहिये कि अपने गम गलत कर रहे हैं। हाँ ये भी एक बात समझ लें, माँ, कि गम गलत कर रहे हैं। लेकिन हर मोड़ पर एक गन्दी औरत रास्ते में Paris में आपको खड़ी मिलेगी। ये किस सिलसिले में? ये मैंने कहा कि आदमी ने अपने लिए एक नाटक बना कर रखा है कि भई मैं बड़ा दुखी हूँ, इसलिए मुझे शराब भी चाहिये और पाप भी करना चाहिए। अगर मैं पाप नहीं करूंगा तो मेरा दुख कैसे मिटेगा? इस तरह की बेवकूफी की बातें करते हैं। अब कहने का मतलब ये है, कि गर तत्व में परमात्मा को खोजना ही सब बात है तो आप समझ सकते हैं कि science के रास्ते से आपको परमात्मा नहीं मिल सकते। science के रास्ते से आपने जो कुछ पाया है, जो कुछ आपने बड़ा भारी 'ज्ञान' पाया है, उससे किसी ने भी आनंद को नहीं पाया है। हाँ, ये जरूर है कि आप आलसी हो गए पहले से ज्यादा। अब आप चल नहीं सकते। England में आप किसी दुकान में चले जाइए, अगर किसी को 2,4,6, का गुणन करके बताइए तो कर नहीं सकते तो उनको तो चाहिए-Computor उसके बगैर उनका काम नहीं चलता है वो अगर खो गया,

तो उनकी खोपड़ी गायब है। पहले तो अति सोचने से उनके हाथ बेकार हो गए। कोई भी कशीदाकारी का काम, खाना बनाने का काम, कोई भी काम वो नहीं कर सकते। अब, जब उनकी खोपड़ी ज्यादा चलने लग गई, उसके बाद मशीन बन गई और उन्होंने अपनी खोपड़ी को मशीन में डाल दिया। अब जब मशीन आ गई तो खोपड़ी भी बेकार। अब सब कुछ उनके लिए मशीन हो गई उसके। बगैर वो चल नहीं सकते। अगर वहाँ पर बिजली बंद हो जाए, तो लोग आत्महत्या कर लें तो अपने यहाँ, भगवान की कृपा से अच्छा है। अभी भी लोगों को आदत है, कि बिजली चली जाती है और वहाँ लोग परेशान रहते हैं, कि गर वहाँ एक बार बिजली चली गई–अमेरिका में बिजली गई तो न जाने कितने accident हो गए, कितनी आफतें आ गईं, कितनी परेशानियाँ आ गई कि तूफान हो गया, कि कभी जलजला आया हो तो इतनी आफत नहीं थी जितना कि बिजली का। उसका तो बड़ा नाटक हो गया। इस कदर उन्होंने अपनी गुलामी कर ली और अब इनको पता हो रहा है, कि plastic के इन्होंने इतने बड़े बड़े पहाड़ खड़े कर दिये। अब इन plastic का क्या करें। इनको नष्ट कैसे करें, अब इसके पीछे लगे हुए हैं। अब सर पकड़ कर बैठे हुए हैं। एक घर में अगर आप जाइए तो आपको न जाने कितनी तरह की plastic की चीजें दिखाई देंगी। हिन्दुस्तानी लोगों का तो दिमाग खराब हो रहा है। जब भी मुझे कहते हैं कि विलायत से आते हुए nylon की साड़ी लाओ। अरे भई, यहाँ इतनी बढ़िया cotton की साड़ी मिलती है। silk की साड़ी मिलती हैं। काहे को वो nylon पहनते हैं। पर हम लोगों को तो nylon का शौक हो गया है। हमें plastic का शौक हो गया है। वहाँ किसी को बता दें तो किसी को विश्वास नहीं होता कि हम इतने बेवकूफ हैं। वहाँ पर तो लोग cotton को भगवान समझते हैं। क्योंकि उनको मिलता ही नहीं। पहले उन्होंने खूब cotton के कपड़े बनाए। अब समझ लीजिए कि गर उनके यहाँ शराब होती है। घर में तो दस तरह के glass, होंगे, इसके लिए ये glass, उसके लिए वो glass, उसके लिए वो glass, उसके लिए वो glass, खाना खाने के लिए बैठेंगे तो एक के लिए एक चमचा, दूसरे के लिए दूसरा चमचा, तीसरे के लिए तीसरा चमचा। उस के लिए दूसरी प्लेट उसके लिए चौथी प्लेट। अरे भाई, एक थाली लेलो और इस हाथ से खाओ। पच्चीस तरह के glass और पच्चीस तरह के ये और पच्चीस तरह की तश्तरियाँ भगवान बचाए। अब ये हालत आ गई कि जितना भी था निकल गया। पृथ्वी माता से सब कुछ तत्व निकाल डाला इन्होंने, खोखले हो गए। अब काहे में खाते हैं। सुबह, शाम हर वक्त कागज में खाते हैं। हमारे एक रिश्तेदार गए थे वहाँ अमेरिका, बेचारे पुराने आदमी हैं। कहन लगे साहब मैं तो तंग आ गया। रोज Picnic करते करते हालत मेरी खराब हो गई। जब देखो तब वो अपनी या तो plastic की प्लेट और या तो कागज की प्लेट। इनके घर में तो ये हालत है। और हम कहते हैं कि व effluent हैं, पैसे वाले। अरे इनके पास है क्या? सिवाय plastic के इनके पास क्या है? plastic में खाना, plastic रहना, plastic में मरना और इनके घरों की हालत ये हो गई है कि रहे होटलों में मरे अस्पतालों में। ये तो खानाबदोश हो गए। इनका तो सारा ही कुछ मिट गया। तो इनकी इतनी गलतियाँ हो गई हैं। Science वालों की किसी भी बात पर मैं बात करूंगी तो आप हंसते हंसते लोट-पोट हो जाएंगे। Medical Science को देख लीजिए, कोई कहेगा मैडकिल Science में ये हो गया, वो हो गया। क्या हुआ है? खाक हुआ है। जरा देख लीजिए। अब बता रहे थे अभी अभी कि साहब आप जो मंजन करते हैं यहाँ पर, उसका जो toothpaste होता है तो उसमें chloroform मिला देते हैं उसकी वजह से, तो chloroform मिला देने की वजह से अब कैंसर होने लग गया है,

तो कोई लोग कहेंगे कि हिन्दुस्तान से मंगा दीजिए हमको नीम toothpaste उसमें chloroform नहीं होता है। मैंने कहा बहुत अच्छा। क्यों कि chloroform महंगा है हम कहाँ से भेजें। हम तो लगा नहीं सकते chloroform उसमें। यहाँ से चीजें जाना शुरू हो गई, हाथ में जो वो लोग साबुन लगाते हैं उसमें भी chemicals होते हैं असल साबुन नहीं होता है। हिन्दुस्तान का साबुन थोड़े दिन में देख लीजिएगा, सारी दुनिया में चला जाएगा। आप लोग अब शेयर-वेयर मत लीजिए। क्योंकि हिन्दुस्तान का साबुन शुद्ध होता है, वो तत्व पर बना होता है। कोई artificial पर नहीं। हरेक चीज वहाँ की; मैं तो कभी विदेशी चीज इस्तेमाल नहीं करती। इसीलिए-क्योंकि सब चीज इनकी, आप देखिये वो बड़े बड़े scents होते है, तंबाकू होता है, क्या क्या होता है उसमें सारा और कुछ नहीं, तंबाकू है। तंबाकू से बना है इसलिए तंबाकू शब्द। और क्योंकि वो तंबाकू थोड़ी-थोड़ी चढ़ती जाती है, आदमी को नशा आता रहता है वो इस्तेमाल करेगा और वो समझता है कि मैं बड़ा हूँ, मैं तंबाकू इस्तेमाल कर रहा हूँ। तंबाकू है, यानि तंबाकू——का पानी, उससे बनाया हुआ है। और अपने यहाँ के इत्र असल हैं। असल में होते हैं और इनके सारे chemicals होते हैं, उनको इस्तेमाल करने से कोई भी चीज इनके यहाँ है अब ये कहते हैं कि सर में कई लोग लगाते हैं न———तो अपने यहाँ तो पहले होता ही था तो मेहदी वगैरा लगा लेते थे। और ये लोग जो चीज लगाते हैं, करते हैं, उससे कैंसर हो जाता है। वहां इतनी artificiality हो गई कि लोगों के भौहें उड़ गए। किसी के बाल उड़ गए, जवानी में ही। किसी के दाढ़ी ही नहीं आती, किसी के कुछ नहीं आती, अजीब बुरा हाल है। पता हुआ कि वो कुछ ऐसी चीज इस्तेमाल करते गए कि ये सब चीज होना उनका बंद हो गया। वहाँ सरदार जी लोगों का बुरा हाल होगा। और वो लोग ज्यादा शराब पियेंगे तो और भी बुरा हाल होने वाला है।

बहरहाल। कहने की बात ये है artificial चीजों में जाने में-क्योंकि हमने अपने तत्व को जाना नहीं। गर इन सब पंचमहाभूतों के तत्व पर उतरने को कहें, तब भी हम जड़ में फंस गए। उसकी जो जड़ता है, तो उसका तत्व नहीं है। सारे पंचमहा भूतों का तत्व है ब्रह्म। और ब्रह्म तत्व क्या उसको पाने के लिए सिर्फ आत्मा को पाने से ही वह हमारे अंदर से बहना शुरू हो जाता है। उस तत्व को तो हमने खोजा नहीं और खोजते गए, खोजते गए। वहाँ पहुच गए जहाँ वो चीज बिल्कुल बाहर आ गई और जड़ हो गई। उसलिए ये हालत है कि उस देश में कोई लोग खुश नहीं हैं। बड़ा Science मिल गया, बहुत विद्वान हो गए, पढ़ गए, और अब कगार पर खड़े हुए हैं कि एक कदम आगे गए और धड़ से सब के सब नीचे। तभी सब लोग shocked हैं बहुत दुखित रूप से। और इस कदर परेशान हैं कि आप को बहुत कम लोग वहाँ इस कदर मिलेंगे जिनकी कोई न कोई चीज न फड़क रही हो। आँख फड़क रही है, नाक फड़क रही हो, सिर ऐसे होता है और कई परेशानी। कोई चीज वहाँ नहीं मिलेगी जो शांत हो। औरतें आदमी को मारती हैं, आदमी औरतों को मारते हैं, बच्चों को मारते हैं, माँ-बापको मार डालते हैं। दो बच्चों को हर हफ्ते में माँ बाप मार डालते हैं। कहीं सुना। मार ही डालते हैं। मतलब वहाँ की statistics है, कम से कम दो तो मरते ही हैं। और तो भी आप सुनिये माँ बाप मारते हैं। तो ये इस तरह की जहाँ सस्कृति बन गई है तो जानना चाहिए कि उन्होंने तत्व को जाना नहीं, अगर जानते होते, तत्व को अगर जानते तो आज ये हालत नहीं होती। "क्योंकि तत्व जो है आनन्द देने वाला है।" तो इन्होंने तत्व वहाँ खो डाला। तो ब्रह्म देव का तत्व भी गया। अब अपने देश में है हम लोगों ने कहा कि निराकार ब्रह्म है और उसको पाना चाहिए वेद में ऐसे लिखा गया है, ये है वो है, जिद करके बैठ गए। लेकिन वेद में भी लिखा है-वेद माने विद माने जानना-

गर सारा वेद पढ़ करके भी मनुष्य ने अपने को जाना नहीं तो वेद बेकार हुआ कि नहीं हुआ और जब ये बात है तो पहली चीज ये है कि वेद का पठन करने से आप को आत्म ज्ञान नहीं हो सकता। उसके पठन से और सब हो सकता है, लेकिन आत्म ज्ञान नहीं हो सकता। गायत्री मंत्र है। गायत्री बोले जा रहे हैं, गायत्री बोले जा रहे हैं। अरे भई ऐसे बकवास से क्या गायत्री देवी जागृत हो सकती हैं, किसी की हुई, दिखाई दिया आपको ? किसलिए आप गायत्री का मंत्र बोलते हैं, ये भी पता नहीं आपको। गायत्री को जागृत करने के लिए जरूरी है कि मनुष्य पहले अपनी आत्मा को जाग्रत कर ले, नहीं तो गायत्री जो है—परमात्मा की ही एक शक्ति है—जब तक आपने उस परमात्मा को जान न लिया, तब तक आप गायत्री के सहारे कहाँ चलियेगा ? समझ लीजिये कि आपसे Prime Minister नाराज हैं, समझ लीजिए। तो आप तो काम से गये। आपने किसी दूसरे को प्रसन्न कर भी लिया तो आप तो काम से गए ही हुए। कोई आप को बचा नहीं सकता। तो जब तक आपने परमात्मा को पाया नहीं तब तक ये सारी शक्तियाँ व्यर्थ हैं, ये ही इसका सारांश है। और "तत्व सिर्फ आत्मा ही है।" उसी को पाना है। ये जो शक्तियाँ हैं, इनका पाने से आप परमात्मा नहीं पा सकते पर परमात्मा को पाने से इन शक्तियों के तत्व पर आप उतर सकते हैं। आप जो हैं, जो हमको दूसरी ओर ऐसा चित्त देना चाहिए कि इससे ऊपर जो शक्ति है, जो कि 'देवी-शक्ति' मानो जाती है ये आपके हृदय-चक्र में होती है। हृदय चक्र—हृदय से मतलब नहीं है। दूसरा तत्व है जिसे हमें कहना चाहिये, हृदय चक्र का जो तत्व है, वो देवी तत्व है।

अब देवी तत्व क्या है हमारे अंदर। जब ये खराब हो जाता है तो क्या उससे नुकसान होते हैं। इसको आप समझ लीजिए। "देवी तत्व से हमारे अंदर सुरक्षा स्थापित होती है।" इससे हम सुरक्षित होते हैं। जब बच्चा १२ साल का होता है तब तक इस देवी तत्व के अनुसार, हमारा जो sternum है जो कि सामने की हड्डी है, यहाँ पर, उस हड्डी में सैनिक तैयार होते हैं जिसे अंग्रेजी में anti-bodies कहते हैं। ये देवी के सैनिक हैं। और ये सारे शरीर में चले जाते हैं और वहाँ जा कर सजे रहते हैं कि आप पर कोई भी तरह का attack आए, उसे रोक दें। जब आपकी सुरक्षा किसी तरह से खराब हो जाती है, उस वक्त ये चक्र पकड़ा जाता है। अब मैंने अभी तो कुछ दिन पहले बताया था कि स्त्री में विशेषकर सुरक्षा बड़ी जल्दी खत्म हो जाती है। जैसे कि एक स्त्री है, अच्छी है, सद्गुणी है, लेकिन उसके पुरुष ने, मनुष्य ने उसको सुरक्षा नहीं दी। समझ लीजिए एक औरत है, उसको अपने पति पर शक है, शक ही है समझ लीजिए कि यह आवारा किस्म का आदमी है किसी और औरत के साथ। उसका ये चक्र पकड़ जाता है, इस वक्त आदमी को बजाए इसके कि उस पर नाराज हो उसका फिर से सुरक्षा चक्र ठीक करना चाहिए कि नहीं भई ऐसी बात नहीं, तुम्हारे सिवाय मेरे लिए कोई और चीज नहीं। उसके तरीके हैं। उसको सोचना चहिए कि किस तरह औरत को सुरक्षा दे, बजाय इसके कि औरत से बिगड़े। वो तो खुलेआम औरत के सामने आकर "तुम कौन होती हो बोलने वाली ? तुम हमें टोकने वाली कौन होती हो ? तुम तो बड़ी ये हो, तुम तो बड़ी शक्की हो और जाओ तुम अपने बाप के घर।" सुरक्षा उसका खत्म। आदमी को हमारे हिन्दुस्तान में खासकर लगता है कि वो जो चाहे सोचे ठीक है। वो कभी पाप ही नहीं करता सारा जो भी chastity है, वो औरतों का ठेका है आदमी को कोई जरुरत नहीं chastity की। ऐसा अपने यहाँ शायद लोगों का विचार है। उसका इलाज जो है कायदे से हो जाता है। जैसे England में आप जाइए तो सब आदमी हमाल हो गए हैं, बिल्कुल हमाल। सुबह से शाम बिल्कुल गधे जैसे काम करते हैं। और घर में आए तो बीवी ने

अगर उनको divorce कर दिया किसी भी तरह से तो उनका घर बिक जाता है, आधी property बीवी की आधी आपकी । जिस आदमी ने दो-तीन बार ऐसे किया उसके साथ हुआ वो तो बिल्कुल रास्ते पर पड़ गया। वो शराब पी पीकर मर जाएगा और उसकी बीवी जो है उसके पास खूब पैसा हो जाएगा। उसने दो-तीन शादियाँ करलीं, हो गए। फिर जब बाह्य से, तत्व से नहीं बाह्य से उसका इलाज जो होता है तो वहाँ के आदमी जो हैं आपको विश्वास नहीं होगा कि वहाँ के आदमी जो हैं बिचारे हर समय औरतों के पीछे दौड़ा करते हैं। और वो उनके ऊपर हुक्म जमाती हैं। बर्तन साफ नहीं किये आपने ? ऐसे बर्तन साफ किये जाते हैं ? "चलो झाड़ू लगाओ। और तुमको झाड़ू लगाना नहीं आता ? इस तरह से झाड़ू लगा रहे हो। कभी तुम्हारी माँ ने सिखाया नहीं झाड़ू लगाना ? और इस तरह से आदमी हर समय झाड़ू लगाता रहता है। मैंने देखा अपनी आँख से— आश्चर्य होता है। और सारा बिस्तर उसको साफ करना पड़ता है और सारी सफाई उसे करनी पड़ती हैं। जरा भी गंदा हुआ, चार आदमी बैठे हैं— चलिये उठाइए, उठो सफ़ाई करने। और इसीलिए वहाँ पर आपने देखा होगा, परदेस में kitchen की जो व्यवस्था संस्था बहुत develop हो गई है क्योंकि आदमियों को करना पड़ता है। यहाँ अगर चक्की चूल्हे करने बैठे तो पता चले। अपने आदमी लोगों को कोई भी काम करना नहीं आता। कोई भी काम। आदमी यों हो गये—— की क्या जरूरत है ? कोई भी घर का काम करना, कोई भी चीज़ ठीक से करना, इससे उनको कोई मतलब नहीं। जैसे कि हमने देखा है, जैसे वो विलायत जाते हैं तो उनके छक्के पंजे छूट जाते हैं आदमियों के। खाना बनाना उनको आता नहीं। बर्तन धोना उनको आता नहीं, झाड़ू हाथ में लेना उनको आता नहीं, कोई काम करना ही नहीं आता। वहाँ तो नौकर कोई होते नहीं। students खासकर के उनका हाथ खराब हो जाता है। कहेंगे माँ की बड़ी याद आ रही है। क्यों ? क्योंकि अब यहाँ हमें खाने को अच्छा नहीं मिलता। मैंने कहा तुम क्यों नहीं बनाते ? बोला हमको तो कुछ आता ही नहीं। आदमी हो गए तो निठल्लू, फिर उनको कोई मतलब नहीं। मैं अभी एक—बड़े भारी Secretary साहब हैं education के Sec. है—उनसे बात करी। मुझे उनकी बातें सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ उन्होंने कहा कि दस साल के अंदर इस हिन्दुस्तान में सिर्फ औरतें नजर आएँगी। आदमी सब झाड़ू लगाएंगे। मैंने कहा क्यों ? कहने लगे इतने निठल्लू होते हैं आदमी कि students वहाँ हमने देखा कि लड़कों के जो Leaders होंगे वो दुनिया के गुण्डे जो कभी पास नहीं होते, दस-दस साल एक ही class में बैठे हैं, वो उनके Leaders हैं। मैंने कहा। तभी अपने देश का ये नज़ारा दिखाई दे रहा है। और लड़कियों में जो है, जो लड़की first आती है class में, जो brilliant है, उसका स्वभाव अच्छा है, जिसमें शाइस्तापन है, और जिसमें कुछ विवेक है, ऐसी लड़कियाँ उनकी Leaders हैं। आप लड़कियों को कोई बात समझाइये तो वो कायदे से समझ जाएंगी, समझ जाएंगी। और लड़कों को कहेंगे तो वो हर समय लट्ठ लेकर खड़े हैं। और वो Leaders ही ऐसे बुरे होते हैं, इतने शैतान होते हैं, कि आप उनसे बात नहीं कर सकते, लड़कों को तो ये है कि साहब लड़कियों को तो training ये दो सुबह से शाम ससुराल जाने की, तो उनको तो ससुराल जाना है। और लड़कों को training ये, कि ससुराल जाओ तो मोटर जरूर लेकर आना। तो इस तरह से जब हम किसी भी व्यवस्था के ऊपर उसके तत्व नहीं ढूँढते और उसके तत्व से उसका इलाज नहीं कर रहे हैं तब हमारे अंदर बड़े दोष आ जाते हैं। इसीलिए विवाह का तत्व समझ लेना चाहिए और वो तत्व है कि इसके अंदर हमारी जो पत्नी है, वो हमारी पत्नी है। अपने देश के लोगों से ये कह रहे हैं, वहाँ ये उल्टा कहना पड़ता है, वहाँ आदमियों की

सुरक्षा खराब है, उनकी हालत खराब हो जाती है। लेकिन यहाँ पर जिन औरतों का यह चक्र खराब हो गया है उनको Breast-cancer की बीमारी हो सकती है तपेदिक की बीमारी हो सकती है। Breast-cancer की बीमारी ज्यादातर इसी से होती है। अब इसकी बीमारी को ठीक अगर करना है, तो उसके मर्द से कहें कि भई अपनी बीवी की सुरक्षा ठीक करो तो मेरी बात नहीं मानेंगे। वो कभी मानेंगे नहीं और Doctor तो उसको ठीक नहीं कर सकते बस वो कहेंगे कि operation कर डालो, काम खत्म। Cancer हुआ काट डालो। नाक काट डालो, कान काट डालो, यहाँ से इनके ये काट डालो। बस cancer का आदमी चल रहा है, आधी चीज़ उसकी गायब है। और थोड़ी चीजें हैं, उसके सहारे चल रहा है।

"सहज योग ऐसे चीज नहीं है। सहजयोग तत्त्व पर उतरता है इसका कौनसा तत्व खराब है, उसे देखता है, उसे ठीक करता है।"

अब नाभि चक्र के चारों तरफ जो महान तत्त्व हमारे अंदर है, जिसे कि धर्म तत्त्व कहना चाहिए, उस धर्म तत्त्व को सम्भालने वाला जो तत्त्व है उसका जो आधार है उसका जो मार्ग दर्शन करता है, तो 'गुरू-तत्त्व है। ये गुरू-तत्त्व अगर खराब हो जाए तो cancer की बीमारी बहुत आसानी से हो जाती है। सबसे आसान तरीका cancer को अगर खोजना है तो आप किसी गलत गुरू के पास चले जाइए। 5 साल में अगर आप के अंदर कैंसर न आ जाए देखिये। और मैं दस साल पहले से बता रही हूँ इन गुरुओं के नाम, ये कैसे गुरू घंटाल हैं। इनके पास मत जाओ, ये तुमको नुकसान करेंगे, सब में समझा रही हूँ तो सब मुझे ही समझाते हैं कि माँ ऐसा मत कहो तुम को ये लोग बंदूक चला देंगे, ये लोग मार डालेंगे, फलाना ढिकाना। मैंने कहा कि अगर किसी की हिम्मत हो तो चलाए बंदूक। और नाम तक मैंने बताये सब कुछ बताया, और सब गए, मार खाया और मेरे पास आए। या तो Heart attack आ जाएगा। Heart attack नहीं दिया उन्होंने, इतनी कृपा करके छोड़ दिया तो पागलपन दे देंगे या epilepsy दे देंगे। उस पर भी अगर उनको चैन नहीं आया, तो cancer दे देंगे सीधे-सीधे ले लीजिए। क्योंकि आप ने उनको रुपया चढ़ाया है तो कुछ तो आप को देना ही चाहिए। आखिर आपने इतनी सेवा करी गुरू की। उनकी इतनी जेब भरी है तो कुछ न कुछ आप को मिलना ही चाहिए। और गुरू तत्त्व जब हमारा खराब हो जाता है, तो इतने तरह के cancer इंसान को हो सकते हैं। मतलब ये पेशानी है, इसको किसी के सामने झुकाने की जरूरत नहीं है। हर जगह मत्था टिकाने की जरूरत नहीं है। हाँ ठीक है अपने माँ बाप हैं, ठीक है आप टिकाइये। लेकिन किसी को गुरू मानकर उसके आगे माथा टिकाने की जरूरत नहीं है। पहले आप को मालूम होना चाहिये, कि गुरू वही जो परमात्मा से आप को मिलाता। अब मेरा उल्टा है। मैं लोगों से कहती हूँ मेरे पैर मत छुओ। छु-छु : हजार आदमी मेरे पैर पर सर मारते हैं, ऐसे पैर मेरे फूक जाते हैं। vibrations से मैं कहती हूँ मत छुओ तो नाराज हो जाते है माँ दर्शन नहीं देना चाहतीं। और ये बीमारी लोगों में है, कि किसी ने कहा ये आ रहे हैं श्री 108 420, चले सीधे 'साष्टांग' नमस्कार। उसके बाद चक्कर खा कर गिर गए। गुरू ने हमें आशीर्वाद दे दिया है और हम चक्कर खा कर गिर गये और देखा कि 5-6 साल में बराबर पागल-खाने पहुँच गए। और दूसरे आदमी देखते भी नहीं कि इस आदमी की कम से कम तन्दुरुस्ती तो अच्छी रहती भाई जिसके गुरू हैं। कम से कम इसको ये तो आराम होता और हजारों की तादाद में, लाखों की तादाद में जा रहे हैं। "आपके गुरू क्या करते हैं ? कि सातवीं मंजिल पर बैठे हैं। वो बोलते नहीं। मौनी बाबा हैं। बोलते नहीं।" बोलेंगे क्या ? कुछ इस खोपड़ी में हो तो

बोलें। वो बोलेंगे नहीं मौनी बाबा हैं। जाओगे तो चिमटा मार देंगे। चिमटा खाने के लिए लोग सौ-सौ रुपया देंगे कि मौनी बाबा हैं, जितना वो तमाशा करेंगे उतना अच्छा है। नए-नए तमाशे निकालते हैं। नए-नए तमाशे। हरेक 'गुरू' कोई न कोई तमाशा निकालता है। जैसे एक गुरू ने कहा, एक नया तमाशा निकाला कि तुम को हवा में उड़ना सिखाता हूँ। बच्चों को बहुत समझ में आ रहा है लेकिन बड़ों की समझ में नहीं आता। तीन-तीन हजार पौंड लिए। 'तीन-तीन हजार' पाउण्ड। सोचिये। उड़ना सिखा रहे है। मैंने कहा नसीब के मारों, तुम्हारे गुरूओं को ही क्यों नहीं उड़ा के दिखाने देते? पहले उनको उड़वा लिया होता, फिर पैसे देते। उनको खाने को बेचारों को, पहले आलू उबाले। ये भी इतने सीधे लोग हैं बिल्कुल गधे। उबालकर के उनको पानी दिया तीन दिन। कहने लगे पहले तुम्हारा वजन हल्का करना चाहिए उड़ाने के लिए। वो तीन हजार पाउण्ड में। तीन हजार पाउण्ड माने पता है कितना होता है? मेरे ख्याल से 60 हजार रुपये। एक-एक से 60-60 हजार रुपये, अच्छा उसके बाद में उनको 2 दिन वो जो उसके जो छिलके होते हैं वो खाने को दिये-आलू के। सबको कहने लगे वजन तुम्हारा बढ़ना नहीं चाहिए। फिर जो सड़े हुए आलू थे वो आखिरी दिन दे दिये। तो उनको फिर diarrhoea लग गया तो कहा कि ये बहुत जरूरी है। इसी से तुम्हारा वजन घटेगा। फिर थोड़े दिन उनको उल्टा टांग दिया। टंगे रहिये। उससे आप का वजन घट रहा है। फिर उनको foam पर रखा कि इस पर कूदने की कोशिश करिये, जैसे घोड़े पर कूदते हैं उस पर कुदवाना शुरू कर दिया उसके फोटो ले लिये। छपवा दिया कि हम हवा में चल रहे हैं। "बिल्कुल झूठ, महा झूठ, सफ़ेद झूठ, बिल्कुल झूठ।" और कहने लगे हम चल रहे हैं। बताइए आप की क्या मोटरे है, गाड़ियाँ हैं उसमें चलिये। आप ऐसे ऐसे हवा में चलियेगा तो टक्कर खाइएगा। आप सोचिये कि क्या जरूरत है? क्या अब आदमी को पक्षी होने की जरूरत है कि उसको कोई विशेष चीज़—वो 'परम' होना चाहिये। परम दया आनी चाहिये कि ये जब आप गुरु तत्त्व में अपनी अक्ल खो देते हैं और ऐसे बेवकूफों के पास जाते हैं तो आपका गुरू तत्त्व खराब हो जाता है, आप सोचते भी नहीं। एक महाशय मुझसे कहने लगे कि माँ मेरी कर्म-गति का क्या होगा? तो मैंने कहा कि तुम्हारे गुरु क्या कहते हैं? कहने लगे मेरे गुरु ने कहा है कि तुमने जो कर्म किये हैं, जितने पाप किये हैं, उनमें से एक बटा अढ़सठ मैं खा सकता हूँ। अच्छा मैंने कहा कौन सा हिसाब लगाया है इन्होंने। और बाकी का कौन खाएगा? इसका मतलब है कि और अढ़सठ गुरू तुमको ढूँढने पड़ेंगे भैया, तब जाकर तुम पार होगे, क्योंकि बाकी का कौन खाएगा उसकी दुकान कहाँ? क्योंकि इन्होंने तो अपना 'माल' खा लिया। और किसी के पास recommend करने का तरीका—Doctor लोग होते हैं न। जैसे किसी के पास जाइए कि साहब मेरी आँख खराब है। तो कहेगा अच्छा, पहले दांत examine करवा लाओ। फिर वहां सारे दांत निकाल दिये आप के, फिर उन्होंने कहा पहले अपनी आँख examine कर वाओ आँख में फोड़ा है। सब कर लिया। बाद में पता हुआ कि आपके कुछ हुआ नहीं। उसी तरह का इन लोगों का हाल है। ये सब की आपस की साझेदारी है, इन्होंने कहा कि बस मैं इतना ही लेता हूँ बाकी नहीं लेता हूँ। बाकी उस गुरू के पास जाओ। अगर गुरू दूसरे घायल बैठे हैं उन्होंने बाकी का इनका जितना पैसा था निकाल लिया पता हुआ रास्ते में खड़े हैं। घर बिक गया, बीवी बच्चे छूट गए। रास्ते में खड़े हुए हैं, बच्चे बेचारे भीख मांग रहे है।

जब हम अपनी अक्ल इस्तेमाल नहीं करते हैं तब ऐसे गुरूओं के पास जाते हैं। और इस तरह से

सोच लेना कि जो भी काम भगवान के नाम पर होता है, भगवान का काम है, बड़ी गलत बात है। जैसे आज ही हमें एक देवीजी वहाँ पर मिलीं। उन्होंने कहा कि हमारे गुरू पहुँचे हुए पुरुष थे। उसमें कोई शक नहीं। लेकिन यहाँ बैठकर वो घंटा बजा रही हैं कि हम तो गुरू के शरण में हैं। हम तो गुरू के शरण में हैं। तो मैंने कहा कि फिर? तो कहने लगी अब तो मैं पार हो गई माँ। मैंने कहा अच्छा। अपना ही सर्टिफिकेट, अपना ही सब कुछ? कैसे पार हो गई बेटा तुम? मैं तो गुरू के शरण में चली गई मैं तो पार हो गई। मैंने कहा कि ऐसा तो 'मेरी भी शरण' में आने से नहीं हो सकता। अब मैं तो जिन्दा बैठी हूँ। तुम्हारे तो गुरू मर गए लेकिन तुम कहो कि माँ हम तुम्हारे शरण में हैं, हमें पार कराओ। 'थोड़ी तुम्हारी भी पूँजी लगती है और कुण्डलिनी का जागरण लगता है। पार होने का काम है जब तक आप पार नहीं हुए तब तक 'माँ तेरी शरण में हम आए' कुछ नहीं काम बनने वाला, बेटी। साफ-साफ बता दूँ बेटी, पार होना पड़ता है। जब तक आप पार नहीं हैं, तब तक सब बातें बकवास हैं, बेकार हैं कि मैं तुम्हारी शरण में आया हूँ और ये है। अरे ये तो सब आपने अपनी तरफ से कह दिया कि मैं शरण में आया लेकिन मुझे शरण में आना पड़ेगा न। 'काम तो मुझको करने का है।' मेरे हाथ से काम होना चाहिए। जब तक मेरे हाथ से काम नहीं बनेगा तब तक तो बेकार ही चीज हो गई ना और ये साफ-साफ मैं बता देती हूँ कि जो पार नहीं वो पार नहीं और जो पार है वो पार है। उसमें कोई झूठा certificate तो कोई दे नहीं सकता। चाहे आप मेरे से लड़ाई करो, झगड़ा करो, कुछ करो, मैं क्या करूँ? नहीं हुए तो नहीं हुए, हुए तो हुए। सीधा हिसाब इसका होता है कि मेहनत हम लोग कर सकते हैं लेकिन पार नहीं कर सकते "कोशिश हम कर सकते हैं। प्यार हम दे सकते हैं। सब कर सकते हैं, पर पार 'आपको' होना होगा।" जैसे कि हम खाना बना सकते हैं, बढ़िया खाना बना सकते हैं, लेकिन आप के अगर जीभ ही नहीं हो, तो हम खिलाएंगे क्या और आप समझियेगा क्या? आपकी जीभ जो है जागृत होनी चाहिए जो समझे कि माँ ने क्या बना के खिलाया है। खाना तो आपको है या मैं आपके लिये खाना भी खा लूँ।

ये समझ लेना चाहिए तो तत्त्व एक ही है कि जो आप को गुरु सिर्फ परमात्मा से ही मिलाता है। जो परम में उतारता है वो ही गुरु है और कोई भी गुरु नहीं है। "सब अंधे हैं और अंधा अंधे को कहाँ ले जा रहा है भगवान ही जानता है। ऐसे शरणागति से कुछ नहीं। शरणागति तो सिर्फ पार होने के बाद ही शुरू होती है। उससे पहले की शरणागति कुछ नहीं। आपने देखा होगा कि पार किये बगैर मैं पैर पर किसी को लेना नहीं चाहती। क्योंकि क्या अर्थ है इसमें। आप जब पार ही नहीं हुए तो मैं क्या करूँ? पार तो होना पहले जरूरी है। हाँ ये बात जरूर है कि कई लोग पैर पर आने से ही पार हो जाते हैं। तो ठीक है। लेकिन कोई शरणागति की जरूरत नहीं है उस वक्त। शरणागत बाद में होना चाहिए। शरणागत जब आप होते हैं, तब कमसेकम शरण में आने के लिए वो 'आत्मा' तो होना चाहिए, प्रकाश तो होना चाहिए। बगैर प्रकाश के आप मेरे भी पैर पर मत आइए। पता नहीं शायद मैं भी 420 108 हूँ। क्या पता? अगर मैं हूँ तो आप कैसे जानिएगा? कि हूँ या नहीं? बेकार की बकवास भी कर रही हूँगी तो आप कैसे जानिएगा? कभी भी आप जब तक पार नहीं होते आप मेरे पैर पर मत आइए। और इसीलिए मना किया गया था कि किसी के सामने बंदगी नहीं करना चाहिये। बंदगी उसी के सामने करना चाहिये जो परमात्मा से आपको मिलाए। जब तक ये घटना आप में घटित नहीं होती तब तक आप को बिना तत्त्व के कोई भी चीज को मानना नहीं चाहिये। इसलिए जो हमारा सुरक्षा का तत्त्व है उसके बारे में मैंने आपको बताया। कल बाकी के तत्त्वों के बारे में बताऊँगी। आज काफी लम्बा

चौड़ा विवरण दिया है। और मुझे एक बात को बहुत खुशी हुई क्योंकि सबने कल कहा था कि कल सिनेमा है तो कोई नहीं आएगा माँ Programme में और मेरे पति आज ही बेचारे London जा रहे थे लेकिन उनको ऐसे ही छोड़कर मैं चली आई Airport भी नहीं गई। मैंने कहा नहीं, जाना चाहिए, हो सकता है कोई लोग तो आएँगे ही और इसलिए मैं आई और मुझे बड़ी खुशी हुई कि आप लोग अपना 'सिनेमा' छोड़कर भी यहाँ आए। आपने तत्त्व को ज्यादा महत्त्व दिया और इसीलिये मैं बहुत आज खुश हूँ।

परमात्मा की कृपा से आज आप पार हो जाइए तो कल बड़ा मजा रहेगा और कल सब को लेकर यहाँ आइएगा। आपको मैंने वहाँ हल्के फुल्के तरीके से समझाया कोई चित्त पर seriousness नहीं आनी चाहिये। लेकिन इसका मतलब नहीं कि बचखानापन आना चाहिये। इसकी गम्भीरता तो है लेकिन 'लीला' है। ये सारी लीला है। इसलिए बिल्कुल शांतचित्त होकर के दोनों हाथ मेरी ओर करें। और चित को एकदम हल्का करें।

इसीलिये तत्त्व की बात करते हुए मैंने उसको इतना सादगी से बताया और इतने हल्के-फुल्के तरीके से बताया कि वो बड़ी गहन और गम्भीर बात है। जिससे आप के ऊपर उसकी गहनता न छा जाए। क्योंकि जो गहनता है वो पाने की चीज है। वो पाने की चीज है उससे दबता नहीं जाता आदमी। उसमें बहकता नहीं है। उससे दबता नहीं है? उसमें पनपता है।.....

.....अधिकतर लोग पार हो गए हैं मेरे ख्याल से। पार होते वक्त आप देखियेगा आपके अंदर ठंडी हवा सी आएगी। और निर्विचार हो जाएँगे। अपने को निर्विचार रखने का प्रयत्न करें। .....आँख बंद रखें-बिल्कुल-थोड़ी देर। मजा उठाएँ अपना।..... सारे पार

विषय बहुत गहन था लेकिन तो भी आप लोग पार हो गए। मैंने आज तक तत्त्व पर बात नहीं की। आज पहली मर्तबा तत्त्व पर बात की।..... बस अठखेलियां करते हुए तत्त्व को पा लेना चाहिये।.....

..... सूक्ष्म है, इसलिए सूक्ष्मता से देखें आपके हाथों में ठंडी ठंडा हवा सी आने लगेगी। यही पाने का है। सब जीवन का उद्देश्य बस यही है। इस ब्रह्म तत्व को पाएँ जो कि आत्मा का तत्व है। आत्मा का तत्व—ब्रह्म-तत्व, जोकि आपके हाथ से लहरों की तरह बह रहा है। ...

जय श्री माताजी

Mataji Nirmala Devi Srivastava

17th Aug. 19

17/8/1978

अनेकानेक आशिर्वाद,

अत्यन्त प्रेमाने पाठविलेल्या राखी मिळाल्या। रक्षा म्हणजे रक्षा करणारी शक्ती। ह्या शक्तीचे बन्धन फार जोरदार आहे व अत्यन्त कोमल हि आहे कारण ते बहिणीच्या पवित्र प्रेमाचे द्योतक आहे। ह्याला डाकद्वारा राखी बांधल तेथे मग निर्मल रक्षाचे स्थान स्थापित केले असे मान्य आहे। तरी मानवाची प्रेम संवेदन शक्ती इतकी कमी झाली आहे कि राखी बांधणे ही एक यांत्रिक क्रिया मात्र झाली आहे। जर ह्रदयेचा ओलावा नसला तर सर्व सुन्दर मानवी परम्परा शुष्क नी निर्जीव होऊन जातात।

सहजयोग्यांच्या बन्धनांतच आम्ही संसारात जन्म घेतला आहे। व पूर्णपणे त्यांच्या बन्धनांतच वावरत आहोत। आम्ही Desireless तेव्हा तुमच्याच ईश्वर आमचे सारे कांहि अवलम्बून आहे।

रात्रीबेरात्र कांहितरी मागावं लागतं। ते सहज योग्यांना विचारून कळवावे। एक सामुहिक पत्र लिहून त्यांत जे मागणे असेल ते लिहावे।

आमची प्रकृती उत्तम आहे कारण तुम्ही सर्वांची ती करता आहे। कानाचे एक लहानसे operation आहे ते व्हां अगदी काळजी करू नये। दुसरें म्हणजे त्रास मुळीच नाही। तेव्हा चिंता करू नये।

शिवरात्री वोणीमा मोठा दिवस आहे। त्या दिवशी पुण्यात्म्याचे मागणे करावे। मोठे मोठे मनसूबे बांधले पाहिजेत। चित्त नेहमी उंच गोष्टींकडे वळले पाहिजे। लहान सहान गोष्टींत सहजयोग्यांनी चित्त नष्ट करू नये। अजून पुष्कळ कार्य आपले करायचे आहे। ज्या २ सहजयोग्यांनी प्रगती केली आहे त्यांनी कार्यरत झाले पाहिजे। नवीन २ Centres उघडले पाहिजेत। लोकांचे रोग निवारण झाले पाहिजे। व जनतेचे लक्ष परमेश्वर प्राप्तीकडे वेधले गेले पाहिजे।

हे पत्र सर्व सहजयोग्यांना वाचून दाखवावे।

तुमची सदैव काळजी करणारी आई — निर्मला

सर्व सहजयोगी मंडळी,

अनेकानेक आशिर्वाद,

आज प्रथमा नवरात्रीची। आज गणेशाकडे लक्ष द्यावे। त्याची नितान्त भक्ति। आईशिवाय अन्य कोणीहि त्याने भजला नाही। म्हणूनच तो इतका मोठा आहे। इतर सर्व देव फारच बलशाली असतात। प्रत्येकांचे वैशिष्ट्य आहे। आईचे काय वैशिष्ट्य आहे। तिचें अहम् कुठेहि जाणवत नाही। अशा आईलाच शरण जाणारा गणेश इतका सुजाण आहे इतका वंदनीय आहे। आईजवळ कांहि नाहि तिचे नावच नि पासून आहे। निष्कांचन निर्लेपा निर्विचारा निष्प्रयोजना निगर्विता निरिच्छा इ.इ. तेव्हां अशा कफुल्क आईला शरण जाणे म्हणजे त्याला एक विशेष सूक्ष्म विचार पाहिजे। तो हा कि आईकडे कांहि नाही तर कांहि मागता येत नाही म्हणजे स्वतःच किती तृप्त आहे ही गणेशाची तृप्ती कुठून येते? तो स्व ची सत्ता आहे। जेव्हा आत्म्याचे द्वार उघडते तेव्हां कशाचीच कमी राहत नाही। आई हेच द्वार उघडते व म्हणूनच अशी आई गणेशाला प्रिय आहे। जे मिळाल्या अशी स्थिती येते तेव्हां पूर्ण वर दूसरे कांहिच नको असते

आत्मसाक्षात्कार झाला असे समजावे। मग तुमचे रमणं होते। व धन्य धन्य वाटते।

तुम्ही गणेशा सारखेच घडविले म्हणून तुमचे बल अतुल आहे पण त्याला गणेशाची शक्ति प्रेमाने जोडवा पाहिजे मग आईने कौतुक करावे व सर्व सुन्दर सोहळा संसाराचे वहावा।

आम्ही operation मध्ये मेहनत केली व बरेच दिवस नाडी सर्वांचीच हलकी झाली। हेच म्हणजे जुनं काय व सारे चांगले वाईट संस्कार। वाईट ते काढून टाकले व जो उत्तम रंग व कपडा होता तो ~~ससस~~ आणखी नवीनच करून टाकला पाहिजे। पण [illegible] बाजू मात्र शिस्तीनेच निरखते। मी स्वतःच उपचार आधि करून तुमची उजवी बाजू स्वच्छ करणार आहे म्हणजे कार्यशक्ती वाढेल व नवीन जोमाने सहजयोगाचे कार्य पुरे होईल। डावी बाजू मात्र शौचाशौच विचार व सदाचाराने ठीक ठेवणे येथे म्हणजे मंगल व हितकारी लेप केले पाहिजे ([illegible]) व उजवी बाजू संयम यम नियमाने जागृत होते। सहजयोगात Balance ला फारच महत्व आहे तेव्हा अति वर्जित हेच खरे आहे।

तुम्हा सर्वांना अनेक आशिर्वाद मी फार आतुर आहे।

तुमची आई निर्मला

—एक अनुभव—

करीब दो वर्ष पूर्व परम पूज्य माताजी ने मुझे पार किया था। आज यह स्थिति है कि सरलता से दूसरे व्यक्ति की कुण्डलिनी की जानकारी हो जाती है तथा जागृत कराई जा सकती है।

१९८० फरवरी में पार होने के बाद भी पूर्ण विश्वास नहीं था किन्तु सहजयोग केन्द्रों पर नियमित रूप से जाकर अभ्यास एवं दूसरे सहजयोगी बन्धुओं के सहयोग से विश्वास में दृढ़ता आने लगी और चैतन्य लहरियों की परख भी होने लगी।

सर्व प्रथम श्री सुनील शर्मा के सुझाव पर दूसरों को चैतन्य लहरियां देना प्रारम्भ किया। परिणामतः मैं स्वयं चैतन्य लहरियां अत्यधिक मात्रा में अनुभव करने लगा जब कि पहले कभी कभी ही होता था।

११ मास तक मुझे सहस्रार में शीतल सोमरस का अनुभव नहीं हुआ था। अपने सहजयोगी मित्र श्री राजवीर गुप्ता ने सुझाव दिया कि अपना चित्त सदैव श्रद्धा एवं विश्वास के साथ माताजी के चरणों में रखें। माताजी के फोटो को घर में बड़े ही आदर से रखें। धूप, दीप, पुष्प के साथ अपने आपको भी माताजी के चरणों में समर्पित करें। आत्म-समर्पण ही एक मात्र उपाय है। ऐसा ही करने का तत्काल निर्णय कर अभ्यासरत हो गया। माताजी की कृपा से सुषम्ना नाड़ी में शीतलता का अनुभव प्रारम्भ हुआ और शनैः शनैः यह शीतलता सभी चक्रों को भेदकर सहस्रार में पहुँच गई।

शीत ऋतु में कई बार बाहर की सर्दी से कहीं अधिक शरीर के अन्दर शीतलता का अनुभव होता है जो बड़ा ही आनन्ददायक होता है।

परम पूज्य माताजी की कृपा सभी पर हो यही मेरी कामना है।

ओम त्वमेव साक्षात् सहस्रार स्वामिनी
मोक्ष प्रदायिनी आदिशक्ति माताजी
श्री निर्मला देवी नमो नमः॥

रामेश्वर दयाल
दिल्ली

With Compliments from

Talwar Motors (P) Limited
New Delhi — Lucknow

एक सहजयोगी का पत्र

ॐ श्री माताजी नमो नमः

प्रिय श्री राय जी,

माता जी की असीम अनुकम्पा से हम लोग आनंदित हैं। दो दिन पहले कुछ और लोग सहजयोग में आने की इच्छा प्रकट कर रहे थे। तथा कल ही संतोष नगर में जहाँ पर श्री R. R. Singh जी रहते हैं पहली बार सामूहिक रूप से हम लोग एक स्कूल के प्रांगण में एकत्र हुये और meditation तथा प्रार्थना का कार्यक्रम हुआ। यह सब माता जी की कृपा से ही संपन्न हुआ। अभी तक हम लोग यह देखते आये हैं और अनुभव करते आये हैं कि जो कुछ भी हमारी इच्छायें होती हैं वे समयानुसार फलित हो जाती हैं। माताजी की कृपा का कोई अंत नहीं। अत्यंत सूक्ष्मतम रूप से भी हमारी रक्षा करती हैं तथा हमारे विकास में निरंतर हमें आशीर्वाद प्रदान कर रही हैं। यह बिना किसी प्रकार की शंका के (doubt) सिद्ध हो गया है कि माता जी की शरण में जो भी जायेंगे मुक्त हो जायेंगे तथा उन्हें भी 'अनंत जीवन' मिलेगा। क्योंकि अब तक जो भी हमारे संपर्क में पहली बार आया सभी को माता जी का आशीर्वाद मिला और उन्हें प्राप्त हुआ। इसके बाद सामूहिक प्रयत्नों द्वारा और विकास होता जायेगा। यदि हो सके तो कुछ फोटोग्राफ भेजें ताकि नये सहजयोगियों को भी फोटो प्राप्त हो सके।

मेरा अपना सहज योग का अनुभव बड़ा ही अनूठा है। अभी मैं उसे पूरा नहीं कर पाया हूँ पर भविष्य में शीघ्र ही पूरा हो जायेगा क्योंकि अभी तक मेरे साथ नये नये अनुभव होते हैं और होते रहेंगे। यह सब परमात्मा की कृपा और अपने बच्चों के प्रति प्रेम है। सिवाय 'ब्रह्म' के कुछ नहीं है। मेरी चेतना में सिर्फ माता जी हमेशा विराजमान रहें यही मैं प्रार्थना करता रहता हूँ। जो कुछ "सत्य" है उसकी अभिव्यक्ति जिसके द्वारा होती है वह है 'सत्य की शक्ति"

"Spirit of Truth" बिना अभिव्यक्ति के उसे जाना नहीं जा सकता। अतः जो "ब्रह्म" या "परब्रह्म" है उसकी लीला उसकी शक्ति के द्वारा ही सम्पन्न हो रही है। और उसी से उसे जाना जा रहा है। जानने का कोई अंत नहीं। उस अनंतता में जो भी जो कुछ खोजेगा मिलेगा। अतः उसे ही क्यों न खोजें जो सबका स्रोत है, प्रकाश है, ज्ञान है, जीवन है, आनंद है, पवित्रता है, सत्य है और सुन्दरतम है तथा परिपूर्ण है और शाश्वत और अनंत है। माता जी हमेशा मुझे ज्ञान प्रदान कर रही हैं तथा मेरा बहुत ख्याल रख रही हैं। समस्त संसार उनकी शरण में आये और अपने आपका उद्धार कर ले यही मेरी मनोकामना है। क्योंकि सृष्टि के हर कण में वे ही विराजमान हैं। पत्र दें तथा माता जी के कार्यक्रम के विषय में लिखें। हमारी तरफ से समस्त सहजयोगियों को अनेकानेक शुभकामनायें।

अपका ही
सी.एल. पटेल
हैदराबाद

१२-१२-८२

Registered with the Registrar of Newspapers under Regn. No. 36999/81

NORTHERN INDIA THEATRES

3, Ishwari Niwas, Chandni Chowk,
DELHI-110006

Edited & Published by Sh. S. C. Rai, 43, Bunglow Road, Delhi-110007 and
Printed at Ratnadeep Press, Darya Ganj, New Delhi-110002.
One Issue Rs. 5.00, Annual Subscription Rs. 20.00 Foreign [By Airmail £ 4 $ 8]